Regarding referencing of Tribal Ministry as Adivasi Ministry and Welfare of Adivasis

एडवोकेट गोवाल कागडा पाडवी **(**नन्दुरबार**) :** महोदया, मैं आपका आभारी हूं कि आज मुझे आपने सदन में बोलने का अवसर दिया । मैं आदिवासियों से जुड़े एक बहुत ही गम्भीर मुद्दे पर ध्यान दिलाना चाहता हूं । आदिवासियों से जुड़े कई मुद्दे हैं, लेकिन सबसे बड़ा मुद्दा आदिवासियों की प्रतिष्ठा का है । आदिवासी मंत्री को आदिवासी मंत्री की जगह जनजाति मंत्री कहा जा रहा है । यह तथ्य है कि पिछले दस वर्षों में आदिवासियों से जल, जंगल, जमीन छीन ली हैं । आप लोगों ने आदिवासियों के संवैधानिक अधिकार भी छीन लिए हैं । कृपया आप आदिवासियों की पहचान न छीनें, इसलिए मैं आपसे विनती करना चाहता हूं । आदिवासियों की एक अलग पहचान है । यह जो पहचान है, वह उनकी अपनी पहचान है । आदिवासियों की पहचान उनका जन्मसिद्ध अधिकार है और वह पहचान हजारों वर्षों से चली आ रही है ।

मैं यह कहना चाहता हूं कि हम वनवासी नहीं, हम आदिवासी हैं, हम जनजाति नहीं, हम आदिवासी हैं और भविष्य में भी आदिवासी ही रहेंगे । इस देश के इतिहास में हमारी पहचान को मिटाने की कोशिश न करें । इसे एक प्रतिष्ठित मुद्दा मानते हुए सरकार को जनजाति मंत्रालय को आदिवासी मंत्रालय के रूप में संदर्भित करना चाहिए, यह मेरी विनती है । जनजाति मंत्री को आदिवासी मंत्री के रूप में पुनर्विचार करना चाहिए, साथ ही आदिवासियों का नाम बदलने की बजाए सरकार को आदिवासियों के उत्थान हेतु कार्य करना चाहिए । धन्यवाद ।